(i) जीव-विचार :— चेतन द्रव्य को ही जीव या आत्मा कहते है। जीव में चैतन्य नित्य रूप सर्वदा विद्यमान रहता है, किन्तु अलग-अलग जीवों में इसका स्वरूप तथा इसकी मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। मात्रा के भेद के अनुसार जीवों में एक तारतम्यता है, उनमें सिद्ध आत्माओं का स्थान सबसे ऊँचा है। सिद्ध वे हैं जो कर्मों पर विजय पा चुके है और पूर्ण ज्ञानी भी है। सबसे निचले स्थान में ऐसे एकेंद्रिय जीव आते हैं जो क्षिति, जल, अग्नि, वायु या वनस्पति में वास करते हैं। इन जीवों में चैतन्य का सर्वथा अभाव रहता है, फिर भी इनमें स्पर्श-ज्ञान का अनुभव रहता है। जिन जीवों को दो से पाँच तक इंद्रिय प्राप्त होते है उन जीवों का स्थान जीवों में मध्यम होता है। जैसे :- कृमि, पिपीलिका, भ्रमर, मनुष्य आदि। जीव दो प्रकार के होते है — मुक्त जीव और बद्ध जीव। मुक्त जीव वे हैं जिन्होंने ~~[illegible]~~ पूर्ण रूप से कर्म-इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लिया है तथा जन्म-मरण चक्र से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर लिया है। बद्ध जीव वे है जो अभी तक कर्म-बंधन में फंसे है, तथा नाना प्रकार के दुःखों से ग्रसित है। बद्ध जीव दो प्रकार के होते है :- त्रस जीव और स्थावर जीव।

त्रस जीव :— ~~त्रस~~ जीव उन जीवों को कहते हैं जिनमें एक से अधिक इन्द्रियाँ होती है। त्रस जीव चार प्रकार के होते हैं :—

(i) द्वीन्द्रिय जीव :- इन जीवों में केवल दो ही इन्द्रियाँ विद्यमान होती है, ~~[illegible]~~ त्वचा तथा जिह्वा। जैसे :- सीप, घोंघा आदि।

(ii) त्रीन्द्रिय जीव :- इन जीवों में तीन इन्द्रियाँ विद्यमान होते है, त्वचा, जिह्वा, नासिका (~~[illegible]~~)। जैसे - चींटी, पिपीलिका आदि।

(iii) चतुरिंद्रिय जीव :— वैसे जीव जिनमें चार इन्द्रियाँ पाई जाती है चतुरिंद्रिय जीव कहलाते है, जैसे — भौंरा, मक्खी, मच्छर, आदि। इनमें पाए जाने वाले चार इन्द्रिय है :— त्वचा, जिह्वा, नासिका तथा चक्षु।

(iv) पंचेंद्रिय जीव :— वैसे जीव जिनमें पाँच इन्द्रियाँ पाई जाती है पंचेन्द्रिय जीव कहलाते है। इनमें त्वचा, जिह्वा, नासिका, चक्षु, तथा कर्ण इन्द्रिय विद्यमान होते है, जैसे :- मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।

Scanned with CamScanner

त्रस जीव गतिमान होते है। इन्हें जंगम भी कहा जाता है।
त्रस जीवों में न्यून या अधिक मात्रा में विकास पाया जाता है।

Scanned with CamScanner